

न्यायालय जिला कलक्टर, सिरौही
बईजलास डॉ. भँवर लाल, आई.ए.एस.

राजस्व अपील संख्या 12/2022

अपीलार्थी	बनाम	रेस्पोंडेन्ट
1. श्री चुन्नीलाल पुत्र श्री भीखाजी जाति गरासिया निवासी आपरीखेडा तहसील पिण्डवाडा जिला सिरौही।		सरकार जरिये तहसीलदार पिण्डवाडा

राजस्व अपील अन्तर्गत धारा 75 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956

उपस्थिति :

1. श्री राजेन्द्रसिंह आढा अधिवक्ता अपीलांत।
2. नीरज कुमारी नायब तहसीलदार सिरौही (पैरोकार सरकार)।

निर्णय

दिनांक : 07.04.2022

अपीलार्थी ने यह अपील राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 75 के तहत नायब तहसीलदार, पिण्डवाडा द्वारा उनके मुकदमा संख्या 270/2020 में पारित आदेश दिनांक 13.03.2020 के विरुद्ध दिनांक 10.03.2022 को प्रस्तुत की जो दर्ज रजिस्टर की जाकर अपीलांत अधिवक्ता के निवेदन पर अधीनस्थ न्यायालय का अभिलेख तलब किया जाकर रेस्पोंडेन्ट को सम्मन जारी किया गया।

अभिलेख प्राप्त होने एवं सम्मन तामिल होने पर दोनों पक्षों की बहस सुनी गई। अपीलार्थी के लायक अधिवक्ता श्री राजेन्द्रसिंह आढा द्वारा अपनी बहस में निवेदन किया गया कि नायब तहसीलदार, पिण्डवाडा द्वारा ग्राम धनारी पटवार हल्का धनारी तहसील पिण्डवाडा के खसरा नम्बर 51 रकबा 2.00 बीघा किस्म तालाब पर अपीलार्थी को नये सर अतिक्रमी मान कर राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 91(1) के तहत नोटिस जारी किया गया जो नोटिस अपीलांत को तामिल करवाया गया जिसे अपीलांत पर तामिल मानते हुए उसे उपस्थित बताकर निर्णय पारित कर दिया। अपीलांत को हाजिर बताते हुए भौतिक रूप से बेदखल करने एवं रुपये 300/- का जुर्माना आरोपित करने एवं तीन माह के सिविल कारावास की सजा के आदेश पारित किये गये। जो कानून से उचित एवं विधिसम्मत नहीं है। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा पटवारी हल्का के स्थान नहीं लिये गये है जिसमें पटवारी द्वारा पूर्व में मौके से बेदखल करने का

जिला कलक्टर, सिरौही

कथन सिद्ध नहीं होता है। अपीलान्त को जिरह करने का कोई अवसर नहीं दिया गया है, ना ही अपीलांत को किसी तरह का कोई साक्ष्य प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया है। अपीलांत द्वारा न तो कोई अतिक्रमण किया गया है या विवादित भूमि पर कब्जा किया गया है।

प्रथम पेशी पर ही उसके विरुद्ध निर्णय पारित किया गया है। इस संबंध में उनके द्वारा विधिक दृष्टान्त आर.आर.टी. 2005(2) पेज 1474, आर.आर.डी. 1993 पेज 465, एवं आर.आर.डी. 2001 पेज 401 प्रस्तुत कर अधिनस्थ न्यायालय के निर्णय को अपास्त कर अपीलार्थी की अपील स्वीकार करने का निवेदन किया गया।

रेस्पोडेन्ट की ओर से बहस में परोकार सरकार द्वारा निवेदन किया गया कि विवादित भूमि पर अपीलार्थी द्वारा अतिक्रमण कर कब्जा कर काश्त किया है। अधिनस्थ न्यायालय द्वारा निर्णय पारित करने में किसी तरह की कोई कानूनी त्रुटि नहीं की गई है। अपीलान्त को पेशी का नोटिस तामिल शुदा अधिनस्थ न्यायालय की पत्रावली में उपलब्ध है। अपीलान्त आदतन अतिक्रमी है एवं विवादित भूमि सरकारी बिलानाम भूमि है जो नियमों के तहत आवंटन या नियमन नहीं हो सकती। राजकीय भूमि की रक्षा करना प्रशासन का प्रथम दायित्व बनता है। यदि राजकीय भूमि अतिक्रमित हो जायेगी तो पशुओं के चराई के ऊपर भारी संकट उत्पन्न हो सकता है, अतः अपीलान्त की अपील खारिज की जावे।

मैंने दोनों पक्षों की बहस पर मनन किया एवं पत्रावली का भली भौति अध्ययन एवं अवलोकन किया। अधिनस्थ न्यायालय की पत्रावली का भी अवलोकन किया तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचता हूँ कि विवादित भूमि राजस्व रिकॉर्ड में तालाब दर्ज है। अपीलार्थी को अधिनस्थ न्यायालय द्वारा संवत् 2076 रबी में अतिक्रमण करने से राजस्थान भू राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 91(1) के तहत नोटिस जारी किया गया है जिसमें पश्चात्पूर्ती अतिक्रमण का नोटिस जारी नहीं किया गया है। विवादित भूमि रिक्त करने की अपेक्षा की गई थी उक्त नोटिस अपीलांत को तारीख पेशी से पूर्व तामिल कराया गया था एवं अपीलांत तारीख पेशी पर उपस्थित हुआ। तामिल कुनिन्दा द्वारा तामिल शुदा नोटिस अधिनस्थ न्यायालय में प्रस्तुत किया जो अधिनस्थ न्यायालय की पत्रावली में मौजूद है। अपीलान्त अधिवक्ता का यह कथन कि अधिनस्थ न्यायालय द्वारा उसे पश्चात्पूर्ति अतिक्रमण का नोटिस जारी किये बिना ही अपीलाधीन आदेश पारित कर दिये हैं; मानने योग्य प्रतीत होता है। अधिनस्थ न्यायालय की पत्रावली देखने पर उसकी उपस्थिति अंकित है।

अधीनस्थ न्यायालय द्वारा यह कथन अपने आदेशिका में किया गया है कि अपीलान्त हाजिर है। अलग से लिखे गये निर्णय में उसे उपस्थित बताया गया है। पीठासीन अधिकारी द्वारा उक्त निर्णय पर अपने हस्ताक्षर दिनांक 13.03.2020 को किये जाने पाये जाते हैं।

नायब तहसीलदार, पिण्डवाडा द्वारा अपने निर्णय में पटवारी के रिपोर्ट पर भू अभिलेख निरीक्षक एवं पटवारी के हस्ताक्षर होने की पुष्टि की है। पटवारी द्वारा पूर्व में अतिक्रमण हटाने बाबत कथन अपनी रिपोर्ट में नहीं किया गया है। पत्रावली पर पूर्ववर्ती अतिक्रमण के साक्ष्य मौजूद नहीं है। अपीलांत अधिवक्ता द्वारा निवेदन किया गया है कि उनके द्वारा जुर्माना राशि रुपये 300/- (अक्षरों में तीन सौ रुपये) पटवारी हल्का को जमा करा दिये गये हैं।

अपीलांत गरीब व्यक्ति है इसलिए उस पर नरमाई का रुख अपनाया जाना विधि सम्मत है उसके कारागृह में रहने के कारण उसका परिवार मानसिक एवं आर्थिक पीडा भुगतने को विवश होगा जो न्याय के विपरित होगा। अपीलांत अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत विधिक दृष्टान्त आरआरटी 2005(2) पेज 1474 रिविजन नं. 51 झुन्झुनु-2002 जो माननीय पी.सी.बलाई सदस्य, राजस्व मंडल, अजमेर द्वारा दिनांक 17.5.2005 को निर्णित की गई उसके पैरा संख्या 7 में भी नायब तहसीलदार, मलसीसर के सिविल कारावास के निर्णय को अपास्त किया गया है। आरआरडी 1996 पेज 585 की नजीर से भी हम पूर्णतया सहमत हैं। अतः अधीनस्थ न्यायालय द्वारा अपीलांत को पारित निर्णय में जुर्माना एवं बेदखली का आदेश यथावत कायम रखते हुए अपीलांत की अपील आंशिक रूप से स्वीकार की जाकर सिविल कारावास की सजा निरस्त की जाती है। प्रकरण पुनः अधीनस्थ न्यायालय को इस निर्देश के साथ प्रतिप्रेषित किया जाता है कि अतिक्रमी को भौतिक रूप से बेदखल करें।

निर्णय आज दिनांक 07.04.2022 को सरे इजलास सुनाया गया।



(डॉ. भँवर लाल)
जिला कलक्टर, सिरौही